

## भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में [श्री जगन्नाथ स्वामी रथ यात्रा](#) समिति कीडंगज के तत्वावधान में परयागराज में भगवान जगन्नाथ स्वामी जी की भव्य रथ यात्रा का आयोजन किया गया।

### मुख्य बटु:

- रथ यात्रा कीडंगज में [त्रविणी मार्ग](#) स्थिति [श्री जगन्नाथ मंदिर](#) से शुरू हुई।
  - भगवान जगन्नाथ के नंदीघोष रथ के अलावा गुरुदेव, बदरी वशाल, भगवान राम और भगवान द्वारकाधीश के रथ भी शोभायात्रा का हिस्सा रहे
  - रथयात्रा में राधा कृष्ण, नरसहि अवतार और दामोदर लीला को दर्शाती झांकियाँ भी शामिल रही।
- [जगन्नाथ रथ यात्रा](#) एक [वार्षिकि हट्टि त्योहार](#) है जो [भगवान जगन्नाथ](#), उनके बड़े भाई [भगवान बलभद्र](#) और उनकी छोटी बहन [देवी सुभद्रा](#) की [ओडिशा के पुरी](#) में उनके [घरेलू मंदिर](#) से लगभग तीन किलोमीटर दूर गुंडिचा में उनकी मौसी के मंदिर तक की यात्रा का उत्सव मनाता है।
  - इस त्योहार के पीछे [कविदंती](#) है कि एक बार देवी सुभद्रा ने गुंडिचा में अपनी मौसी के घर जाने की इच्छा व्यक्त की।
  - उनकी इच्छा पूरी करने के लिये [भगवान जगन्नाथ और भगवान बलभद्र](#) ने उनके साथ रथ यात्रा पर जाने का [नरिणय](#) किया। इस घटना को प्रतिवर्ष देवताओं को इसी तरह की यात्रा पर ले जाकर मनाया जाता है।
- इस त्योहार की शुरुआत [कम-से-कम 12वीं शताब्दी ई. से हुई है](#), जब [राजा अनंतवरमन चोडगंग देव](#) ने [जगन्नाथ मंदिर](#) का [नरिमाण](#) करवाया था। हालाँकि कुछ स्रोतों से पता चलता है कि यह त्योहार प्राचीन काल से ही प्रचलित था।
- इस त्योहार को [रथों के त्योहार](#) के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि देवताओं को [तीन वशाल लकड़ी के रथों पर ले जाया जाता है](#), जिन्हें [भक्त रस्सियों से खींचते हैं](#)।
- यह [आषाढ \(जून-जुलाई\)](#) माह के [शुक्ल पक्ष](#) की [द्वितीया](#) को शुरू होता है और [नौ दिनों तक चलता है](#)।

### जगन्नाथ पुरी मंदिर



- यह भारतीय राज्य ओडिशा के सबसे प्रभावशाली स्मारकों में से एक है ।
- यह मंदिर "**सफेद पैगोडा**" के नाम से जाना जाता है और यह चार धाम तीर्थयात्राओं (बदरीनाथ, द्वारका, पुरी, रामेश्वरम) का एक हिस्सा है ।
- यह **कलिंग वास्तुकला** का एक शानदार उदाहरण है, जो घुमावदार मीनारों, जटिल नक्काशी और अलंकृत मूर्तियों से पहचाना जाता है ।
- मंदिर परिसर चारों ओर से ऊँची दीवार से घिरा हुआ है तथा इसके चारों दशाओं की ओर चार द्वार हैं ।
- मुख्य मंदिर में चार संरचनाएँ हैं: **वमिन (गर्भगृह)**, **जगमोहन (सभा कक्ष)**, **नट-मंदिर (उत्सव कक्ष)** और **भोग-मंडप (अर्पण कक्ष)** ।
- जगन्नाथ पुरी मंदिर को '**यमनिका तीर्थ**' कहा जाता है, जहाँ हद्वि मान्यताओं के अनुसार, भगवान जगन्नाथ की उपस्थिति के कारण पुरी में मृत्यु के देवता '**यम**' की शक्ति समाप्त हो गई है ।